ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 83-85**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

शिक्षित महिलाओं में धार्मिक विश्वास

डॉ0 नीलम कुमारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर–समाजशास्त्र विभाग,
अवधेश प्रसाद महाविद्यालय, नदौल, मसोढ़ी, पटना (बिहार), भारत

Received-14.10.2024, Revised-21.10.2024, Accepted-26.10.2024 **E-mail : akbar786ali888@gmail.com**

सारांशः ***भारतीय समाज एवं संस्कृति का इतिहास अति प्राचीन है। पर प्राचीनता के साथ–साथ भारतीय समाज एवं संस्कृति में निरन्तरता भी देखने को मिलता है। यूनान, रोम, मिश्र और सुमेर की प्राचीन संस्कृतिया समय के प्रवाह में बह चूकी है आज वहाँ निवास करने वाले लोगों के जीवन में उस प्राचीन संस्कृति का कोई सूत्र नहीं रह गया है। पर प्राचीन भारतीय संस्कृति, उसका समाज एवं संस्थाएँ आज भी जीवित और उसकी परपराएँ आज भी भारतीय जीवन में विद्यमान है। अर्थात् प्रायः 5000 वर्षों से भारतीय समाज एवं संस्कृति की निरन्तरा बराकर बनी हुई है। पर इन निरन्तरता का अर्थ गतिशीलता का अभाव नहीं है। यदि भारतीय समाज एवं संस्कृति में निरन्तरता है, तो परिर्वनशीलता भी है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है इस नियम से भारतीय समाज भी अछूण नहीं रह पाया है। भारतीय सामाजिक संरचना के सभी पक्षों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है।***

कुंजीभूत शब्द– शिक्षित महिला, धार्मिक विश्वास, भारतीय समाज, संस्कृति, अति प्राचीन, प्राचीन संस्कृति, भारतीय जीवन

भारतीय सामाजिक संरचना में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन स्त्रियों की स्थिति के सम्बन्ध में हुआ है तथा महिलाओं का धार्मिक मान्यताएँ भी परिवर्तन के क्रम में है। उनमें आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की भावना पनपी है। स्वतंत्र होने या रहने की इच्छा ने परिवारिक प्रतिबन्धों से उनको विमुक्त कर दिया है। आज वे राष्ट्रय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण कर रही है।

आधुनिक भारत में, विशेषकर स्त्रियों की स्थिति में, परिवर्तन लाने में जिन प्रक्रियाओं एवं सामाजिक शक्तियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, उनमें पश्चिमीकरण की प्रक्रिया विशेष रूप से उल्लेखनीय है। डॉ श्रीनिवास[1] ने ही पश्चिमीकरण की अवधारणा को विकसित किया है। परिवर्तन की उस प्रक्रिया का द्योतक है, जो कि भारतीय जनजीवन, समाज एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों में उस पश्चिमी संस्कृति के संपर्क में जाने के फलस्वरूप उत्पन्न हुई, जिसे अंग्रेज शासक अपने साथ लाए थे। पश्चिमीकरण ने भारतीय संरचना के सभी पहलूओं को प्रभावित किया है। स्त्रियों की स्थिति को भी इस प्रक्रिया ने प्रभावित किया है।

भारतीय सामाजिक जीवन के एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में, ब्रिटिश काल में ही, परिवर्तन की एक विशेष प्रक्रिया क्रियाशील हुई है जो कि जन–जीवन के प्रतिदिन के कार्यकालापों में दृष्टिगोचर होती है। वह महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है धर्म और उसमें प्रक्रिया का नाम है ''लौकिकीकरण''। डॉ श्रीनिवास[2] ने लौकिकीकरण की सबसे उपयुक्त परिभाषा की है। उनके विचार से इन शब्द का अर्थ है, जो कुछ पहले धार्मिक माना जाता था, वह अब वैसा नहीं माना जा रहा है। इसका तात्पर्य विभेदीकरण की एक प्रक्रिया से भी है, जो कि समाज के विभिन्न पहलूओं आर्थिक, राजनीतिक, कानूनी और नैतिकता...के एक दूसरे से अधिक से अधिक पृथक होने में दृष्टिगोचर होती है।

भारतीय जीवन एवं धर्म, विशेषकर हिन्दु धर्म में पवित्रता और अपवित्रता की धारण में महत्त्वपूर्ण स्थाने रहा है। प्रायः प्रत्येक भारतीय भाषा में पवित्रता और अपवित्रता की धारणा अवश्व निद्यमान रहा है। अपवित्रता की गन्दगी, मलिनता एवं अस्वच्छता और यहाँ तक की पाप के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है।

भारत में विभिन्न जातियों के बीच संरचनात्मक दूरी को इस पवित्रता और अपवित्रता की भावना से ही परिभावित किया जा सकता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में लौकिकीकरण की प्रक्रिया की क्रियाशीलता के फलस्वरूप पवित्रता और अपवित्रता की भावना धरातल पर आ गई हैं आज व्यवसाय जाति एवं पवित्रता–अपवित्रता के आधार पर नहीं, योग्यता के आधार पर अपनाए जा सकते हैं।

भारतीय समाज निम्न जाति में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया क्रियाशील है और वे उच्च जाति के आचार, विचार, धार्मिक क्रिया–कलाप तथा व्यवहार का अनुकरण करते दिखाई पड़ते हैं। दूसरी तरफ उच्च जाति के सदस्यों में पश्चिमीकरण की प्रक्रिया क्रियाशील है और पाश्चात्य संस्कृति के तत्वों का अनुकरण करने लगे हैं।

वहीं लौकिकीकरण की प्रक्रिया भी कार्यरत्त है। धर्म के मामले में या जाति के संदर्भ में पहले जितनी पवित्रता और अपवित्रता को महत्व दिया जाता था, उतना अब नहीं दिया जाता है। विशेषकर उच्च जाति के सदस्यों में लौकिकीरण की प्रतिक्रया कार्यरत्त है। हिन्दूओं में यह प्रक्रिया अधिक क्रियाशील है।[3]

साहित्यिक पुनरावलोकन– डॉ. रमा सिंह (1985)[4] ने भोपाल शहर में हिन्दू शिक्षित महिलाओं एवं धर्म विषय पर महिलाओं को सम्मिलित किया गया था। इस अध्ययन में भी हिन्दू महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक जीवन के अनेक पक्षों में परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि अधिकांश हिन्दू महिलायें कहती हैं कि विवाह जन्म–जन्मांतर का संबंध नहीं है। अधिकांश महिलायें पति को दोस्त समझती है उसे परमेश्वर का रूप नहीं देती।

डॉ. महेन्द्र नारायण सिंह (1987)[5] ने नगरीय परिवेश में रहने वाली हिन्दू महिलाओं का अध्ययन किया। उनके अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि हिन्दू महिलाओं के अन्दर संयुक्त परिवार, विवाह, धर्म, परम्परागत रीति–रिवाज के प्रति काफी परिवर्तन हो रहा है।

अलकेतर(1962),[6] कपाड़िया(1958),[7] मेहता (1970),गौरे (1968)[8] ने भी हिन्दू महिलाओं में धार्मिक परिवर्तन का अध्ययन किया।

अध्ययन के उद्धेश्य–

1. उत्तरदात्रियों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. उत्तरदात्रियों धार्मिक मान्यताओं का पालन करती है या नहीं। इसकी जानकारी प्राप्त करना।
3. धार्मिक मान्यताओं के कारणों को ज्ञात करना।
4. धार्मिक के स्वरूप को ज्ञात करना।
5. उत्तरदात्रियाँ धार्मिक आयोजना करती है या नहीं, इसे ज्ञात करना।
6. उत्तरदात्रियो में धार्मिक सद्भावना को ज्ञात करना।

उपकल्पनाएँ–

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

1. हिन्दू महिलाओं को महिलाएँ पाप–पुण्य पर विश्वास करती है।
2. हिन्दू महिलायें धार्मिक मान्यताओं का पालन करती है।

अध्ययन का क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन के लिए पटना शहर का चयन किया गया।

निदर्शन– पटना शहर के कदम कुँआ, राजेन्द्र नगर, महेन्दु, गोलघर, काजीपुर तथा जयप्रकाश नगर से 200 महिलाओं का चयन सुविधाजनक निदर्शन विधि से किया गया है।

तथ्य संकलन की प्रविधि– प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्रीय सूचनाओं के संकलन के लिए एक संरचित प्रश्नावली का निर्माण किया गया था। प्रश्नावली दो खण्डों में विभक्त थी। प्रश्नावली के प्रथम भाग में उत्तरदात्रियों की जैन सामाजिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित प्रश्नों का समावेश किया गया था, जैसे– नाम, आयु, शिक्षा, व्यवसाय, जाति, परिवार का स्वरूप आदि तथा दूसरे भाग में मुख्य प्रश्न पूछे गये थे, जो शोध–समस्या से सम्बन्धित थे। मुख्य प्रश्नों का निर्माण करते समय मैनें अध्ययन के उद्धेश्यों, प्राक्कल्पनाओं, आश्रित चरों को पूर्ण रूप से ध्यान में रखने का प्रयास किया था।

प्रश्नावली निर्मित हो जाने और पूर्ण रूप से उपयुक्त पाये जाने के पश्चात् इसकी 200 प्रतियाँ छपवायी गयीं तथा प्रत्येक उत्तरदात्री को एक–एक प्रश्नावली बाँट दी गयी। प्रश्नावली वितरीत करने के पूर्व शोधार्थी ने उत्तरदात्रियों को अपना परिचय दिया, अध्ययन के उद्धेश्य से उन्हें अवगत कराया तथा प्रश्नों का उत्तर लिखकर लौटाने के लिए उनसे सविनय निवेदन किया।

सारणीयन– प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के विश्लेषण के लिए सामान्य रूप से साधारण सारिणियाँ बनायी गयी है तथा उपकल्पनाओं के परीक्षण के लिए कन्टीजेन्सी सारणियाँ भी बनायी गयी थी।

तथ्यों का विशलेषण– सारणी में दर्शाये गये आंकड़ों का विश्लेषण करते समय दो बिन्दुओं पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया था। सबसे पहले यह देखने का प्रयास किया गया था कि सम्पूर्ण निदर्शन में उच्च शिक्षित उत्तरदात्रियों का कितना प्रतिशत भां सकारात्मक कितना प्रतिशत नकारात्मक तथा कितना प्रतिशत भां अनिश्चित है? दूसरे बिन्दू पर यह देखने का प्रयास किया गया कि सम्पूर्ण निदर्श में पाये जाने वाले विभिन्न वर्गों के आँकड़ों की वर्ग प्रतिशतता क्या है? इस प्रकार सम्पूर्ण प्रतिशतता और वर्ग प्रतिशतता के आधार पर आँकड़ों और उत्तरदात्रियों की प्रवृत्ति के समझने का प्रयास किया गया।

उपलब्धियाँ– 44 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ 30 वर्ष से 35 वर्ष आयु की है। 20 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ 36 से 41 वर्ष आयु की है। 42 से 47 वर्ष की 25 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ हैं। 48 वर्ष से अधिक आयु की 11 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ हैं।

28 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ ब्राह्मण जाति की है। 13 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ कायस्थ जाति की है। 8 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ कुर्मी जाति की है। 10 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ कोइरी जाति की है। 34 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ यादव जाति की है। 8 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ भूमिहार जाति की है। 6 प्रतिशत मल्लाह, 5 प्रतिशत राजपूत, 4 प्रतिशत कुम्हार, 3 प्रतिशत तेली, 4 प्रतिशत कहार, 2 प्रतिशत दुसाध, 3 प्रतिशत चमार जाति की है।

10 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ प्राथमिक स्तर तक शिक्षा ग्रहण किये हैं। 03 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ पूर्व माध्यमिक स्तर तक शिक्षा ग्रहण किये हैं। 08 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ मैट्रिक, 25 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ इन्टरमीडिएट, 30 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ स्नातक, 15 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ स्नातकोत्तर तथा 09 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ पीएच.डी. तक शिक्षा ग्रहण किये हैं।

30 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ नौकरी करती हैं, 12 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ स्वरोजगार करती है तथा 58 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ गैर कामकाजी है। 77 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के परिवार केन्द्रीय प्रकार है तथा 23 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ संयुक्त परिवार की सदस्या है।

72 प्रतिशत महिलायें धार्मिक मान्यताओं को पूर्णतया पालन करती है जबकि 18 प्रतिशत महिलायें कुछ मान्यताओं को मानती है कुछ को नहीं। 6 प्रतिशत महिलायें ऐसी भी हैं, जो धार्मिक मान्यताओं को बिल्कुल स्वीकार नहीं करतीं, जबकि 4 प्रतिशत महिलायें तटस्थ रहती है। समय और परिस्थिति के अनुसार कार्य करती है। इस तरह अध्ययन से यह मान्यता दृढ़ हो जाती है कि हिन्दू महिलाओं में धर्म के प्रति श्रद्धा होती है।

हिन्दू महिलायें धार्मिक मान्यताओं को क्यों स्वीकार करती है, इस बारे में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं उसके अनुसार 80 प्रतिशत महिलायें सुख एवं शान्ती के लिए, 7 प्रतिशत महिलायें पूर्वजों की मान्यताओं के कारण, 9 प्रतिशत महिलायें परिवार के दूसरे सदस्यों के कारण मान्यताओं को स्वीकार करती है। 4 प्रतिशत महिलायें व्यक्तिगत हितों की पूर्ति के लिये धार्मिक मान्यताओं को स्वीकार करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि आज भी नगरीय सभ्यता के चकाचौंध में जीने वाली हिन्दू महिलायें परम्परावादी तथा धार्मिक आस्थामूलक वाली महिलायें हैं।

52 प्रतिशत हिन्दू महिलाओं ने स्वीकार किया है कि वे मंदिर जाती है, लेकिन प्रतिदिन मंदिर जाने वाली महिलाओं की प्रतिशत मात्रा 6 है। 28 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वे सप्ताह में एक बार अवश्य मंदिर जाती है। अन्य महिलायें किसी विशेष अवसर पर मंदिर जाती है। लेकिन यह स्पष्ट है कि किसी भी हालत में शत–प्रतिशत महिलाएँ मंदिर नहीं जाती है।

जति के आधार पर अगर उपर्युक्त तथ्य का अवलोकन किया जाय, तो तथ्य काफी रूचिपूर्ण हो सकते है। प्रतिदिन मंदिर जाने वाली महिलाओं में मुख्यतः ब्राह्मण जाति की है, अथवा कायस्थ जाति की। मध्यम वर्ग की महिलाएँ सप्ताह में एक बार या किसी विशेष पूजा के अवसर पर ही मंदिर जाती हैं। लेकिन निम्न जाति अनुसूचित जाति की महिलाएँ अपनी जाति के सदस्यों द्वारा पूजित देवी–देवता के मंदिर में जाति हैं, वह भी कभी–कभी

उन लोगों के मंदिर जाने में उतना अन्तर क्यों है, इस संबंध में उत्तरदात्रियों ने स्वयं ही स्पष्टीकरण किया है। उन लोगों ने यह स्वीकार किया है कि पूर्व की तुलना में वर्तमान समय में, महिलाओं का मंदिर जाना कम हुआ है। इसका एक कारण तो मनोवैज्ञानिक है अर्थात् मंदिर से उनका लगाव पूर्व की तुलना में कमा है। दूसरा कारण समय का अभाव होता है। उनका गृह कार्य एवं बाहर का कार्य वढ़ गया है कि उनके पास समय का अभाव हो गया है। जिसके फलस्वरूप वे नियमित रूप से मंदिर जाने में असमर्थ रहती है। जब उनसे यह पूछा गया कि मंदिर जाने और आने में उन्हें कितना समय लगता है। उनका इस संबंध में कहना था कि मंदिर जाने और आने में कितना समय लगता है यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न नहीं है। लेकिन मंदिर जाने की तैयारी में समय लगता महत्वपूर्ण है। इसके लिए स्नान करना, कपड़े धोना तथा पूजा की सामग्री का संकलन करना आदि में जो समय लगता हे वही महत्त्वपूर्ण हैं

महिलाओं से यह पूछे जाने पर कि क्या आप विभिन्न पर्व एवं त्योहारों को धार्मिक आयोजन का रूप देती है, इस संबंध में 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पर्वों एवं त्यौहारों की धूमधाम से मनाने की राय देती है, जबकि 18 प्रतिशत उत्तरदाता सत्यनारायण देवता

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

के कथा का आयोजन भी करती है। 07 प्रतिशत उत्तरदाताओं के यहाँ देवी/देवताओं का जाप एवं पाठ का भी आयोजन होता है। 08 प्रतिशत उत्तरदाताओं के यहाँ शिव चर्चा की जाती है, जबकि 12प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे मिले जो किसी आयोजन में रूचि नहीं रखतीं।

महिलाओं से यह पूछा गया कि आप दूसरे सम्प्रादय के धार्मिक उत्सवों तथा पर्वों में क्या उनके साथ हिस्सेदारी लेती हैं, इस संबंध में 52 प्रतिशत महिलायें भाग नहीं लेती, जबकि 48 प्रतिशत महिलायें किसी न किसी दूसरे सम्प्रदाय के धार्मिक उत्सव में भाग लेती है। पटना शहर की हिन्दू महिलाओं की विचारधारा में व्यापक बदलाव परिलक्षित होता है, वे समाज में एकता की सूत्रधार बनना चाहती है ताकि समाज अमन–चैन की सांस ले सके। वास्तव में यह देखा गया है कि जब कोई साम्प्रदायिक तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है तो सबसे पहले परिवार में महिलायें ही अनमनष्क होती है, क्योंकि सारी जिम्मेदारी उन पर ही केन्द्रित होती है। हिन्दू महिलायें चाहती है कि समाज में कभी तनाव या विसंगति की स्थिति न निर्मित हो। वास्तव में आज की हिन्दूनारी प्रगतिशील विचारधारा की पोषक नारी है इसीलिये वह समाज में समन्यनवादी दृष्टिकोण को अपनाना चाहती है।

हिन्दू महिलाओं से यह प्रश्न पूछा गया कि क्या आप "तीज" करती है? शत–प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वह तीज पर्व करती है। उन लोगों ने कहा कि पति के दीर्घायु होने के लिए तीज पर्व करती है। इस पर्व में भादो तृतीय के दिन भगवान शिव की पूजा की जाती है।

हिन्दू महिलाओं से यह पूछा गया कि आप जीतिया पर्व करती है। शत–प्रतिशत महिलायें इस पर्व को करती है। पुत्र की सौभाग्य कामना एवं उसके जीवन की सुरक्षा हेतु महिलायें इस पर्व को करती है।

हिन्दू महिलाओं से यह पूछा गया कि क्या आप छठ पर्व करती है? 42 से 47 वर्ष की आयु समूह अथवा इस आयु समूह से अधिक के आयु समूह की अधिकांश महिलायें इस पर्व को करती है तथा निर्जला व्रत रखते हुए सूर्य को स्वयं धार देती है। हिन्दू महिलाओं से यह ज्ञात किया गया कि आप पाप–पुण्य में विश्वास करती है? 84 प्रतिशत महिलायें पाप और पुण्य में विश्वास करती है तथा 16 प्रतिशत महिलायें पाप–पुण्य में विश्वास नहीं करती है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि नगरीय परिवेश में रहने वाली हिन्दू महिलाओं में धार्मिम मापदण्डों के प्रति थोड़ी कमी आयी है। इसे हम उनकी उसकी कहेंगे या शहरी परिवेश में जीने का माहौल? इस अध्ययन के परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि हिन्दू महिलायें धार्मिक मान्यताओं को एक सीमा तक स्वीकार करती है, पर जो मान्यता उनके हितों का संबंर्धन नहीं करती उसे दरकिनार भी कर देती है। मान्यताओं को वे अपने व्यक्तिगत हितों से भी जोड़ती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. श्रीनिवास, एम.एन. (1952) : रीलिजन एण्ड सोसायटी अमंग द कुर्गस ऑफ साउथ–इंडिया, मॉक्सफोर्ड युनिर्सिटी प्रेस, बाम्बे।
2. वही (1959) : द दोमिनेन्ट कास्ट इन समपुरा, अमेरिकन एन्थ्रोपालिजिस्ट।
3. वही (1962) : कास्ट इन मॉडर्न इंडिया एण्ड अदर एसेज, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे।
4. सिंह, रमा (2018) : शिमित हिन्दू महिलायें एवं धर्म, बी0 आर0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली।
5. सिंह, नारायण (2020) : हमारा धर्म और उसकी वैज्ञानिक रूप–रेखा, हिन्दू साहित्य सम्मेलन, कानपुर।
6. अलतेकर, ए. एस. (1962) : द पोजीशन ऑफ वुमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसीदास, न्यू दिल्ली।
7. कपाड़िया, के0 एम0 (1966) मैरिज एंड फमेली इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड प्रेस, बाम्बे।
8. गोरे, एम0 एस0 (1968) : अर्बेनाइजेशन एण्ड फेमिली चेन्ज इन इंडिया, पापुलर प्रकाशन, बाम्बे।

*****